कथा रचना

विषय :- इनमें से कौन है मेरा भाई?

संध्या का समय था। चारों ओर सूरज की रोशनी फैली हुई थी। खेतों में अरहर और अलसी हवा की धीमी झोंकों से चुंबित हो रही थी। मैदानों में पूरा सन्नाटा छाया हुआ था। प्रकृति का यह दृश्य काफ़ी मनोहर और रमणीय था। इस खूबसूरती का आस्वादन लेते हुए शेखर मेहता अपनी आरामदायक कुर्सी पर बैठे हुए थे। भला प्रकृति से द्वेष कैसा? प्रकृति है ही इतनी खूबसूरत की उसके सौन्दर्य में मग्न होने से हम हमारे सारे दुःख से मोचित हो जाएंगे और शायद इसी लिए ही शेखर मेहता घंटों प्रकृति को निहारते रहते थे। किसी ने सच ही कहा था कि मनुष्य एक सामाजिक जीव है। समाज की हर एक प्रवृत्ति उसके मानसिकता पर कितना झकझोर प्रभाव डालती है उसका कोई पता नहीं।

मनुष्य कभी भी संतुष्ठ या स्वयं में पर्याप्त नहीं रह सकता है क्योंकि भगवान उसे जो भी देता है वह उससे भी ज्यादा उनसे चाहते हैं। परंतु हमारे कथानायक शेखर मेहता इनमे से न था। वह न तो स्वयं में अपर्याप्त था और न ही उसे किसी प्रकार की असंतुष्ठि थी। एक छोटा-सा मकान था और दो बच्चें

थे यही शेखर की कमाई थी। शेखर एक प्रकृति - निरीक्षक था और प्रकृति की निहारते वह उनमे इतना घुल-मिल जाता था कि वह किसी और कार्य के बारे मे सोच ही नही पाता था। यहाँ तक की शेखर जी को फोटोग्राफ़ी का भी बड़ा शौक था। घंटोभर पुष्पों एवं कलियों का वह फोटो निकालते ही रहते थे।

इतना सब होकर भी शेखर हमेशा एक ही बात के बारे मे सोचता रहता था और वह था उसका भाई - 'मुन्ना'। शेखर के २६ साल होने से मुन्ना लापता है और अब शेखर 65 साल का हो गया है अब तक मुन्ना का कोई अता-पता नही है। शेखर और मुन्ना के बीच भाईयों के रिश्ते से अधिक मित्रों का रिश्ता था। इनके बीच कोई भी बात छिपती न थी। जो कुछ भी होता था दोनों खुलामुँह एक-दूसरे से कह देते। दरअसल, शेखर बचपन मे काफ़ी जिद्दी था और ज़िद से अपनी सारी मनोकामना पूरी करवाता था परंतु मुन्ना वैसा न था। मुन्ना का शीतल और नर्म स्वभाव का था। सभी से मधुरता से पेश आता और सभी का लाड़ला भी। घरवालों और आस-पास के लोगों को उसके अच्छे स्वभाव और क्षमता से काफ़ी जलन होती थी। शेखर को हमेशा मुन्ना समझाता रहता और शेखर भी अपनेआप को बदलने की कोशिश करता और करता भी कैसे नही मुन्ना उसका बड़ा भाई जो था !!!

..... एक दिन जब पूरे घर में खुशी का माहौल था तब एक अंधकार के साये के तरह दुःख उनके सिर में मंडराने लगा। उस दिन को शेखर कभी न भूल सकता है — "नवंबर 26"। मुन्ना का जन्मदिन तथा वह दिन जब उसकी सेना में भर्ती हुई थी। मुन्ना शाम के चार बजते ही कहने लगा - "माँ, मैं कुछ क्षण के लिए बाहर जा रहा हूँ।" माँ ने तुरंत पूछा - "बेटा आज खुशी का अवसर है इसलिए तुम्हारे यहाँ होना बहुत जरूरी है। हाँ, और शर्मा जी की बेटी स्वाति भी आज इस शुभअवसर पर आयेगी। शर्मा जी से बात करके मैं तुम्हारी और स्वाति की शादी भी पक्की करवा दूँगी।" मुन्ना ने हँसकर जवाब दिया - "माँ, आप भी न! शादी के लिए तो अब मैं बहुत बड़ा थोड़ी न हुआ हूँ, खैर, अब आप मुझे थोड़ी देर के लिए बाहर जाने दीजिए!" इतना कहकर मुन्ना सीढ़ियाँ उतरने लगा। माँ ने पीछे से आवाज़ लगाई - "बेटा मुन्ना रात तक तो आ जाओगे न?" मुन्ना ने सीढ़ी उतरते हुए जवाब दिया, "जी माँ।" बस फिर मुन्ना अपनी मोटरसाईकिल लिए चल पड़ा। यह देखकर पिता जी ने माँ से पूछा - "अरे इंदु यह मुन्ना इस वक्त बाहर क्यों जा रहा है? आज तो उससे मिलने हमारे बहुत रिश्तेदार आने वाले हैं, तुम उससे कह देती तो अच्छा होता।" माँ तुरंत बोली - "हाँ, कहा था मैंने

उससे परंतु लड़का मानता ही नही। रात तक आ ही जाएगा।"
रात बहुत हो चुकी थी परंतु अब तक मुन्ना घर न पहुँचा था।
बहुत जगहों मे छानबीन की, बहुत लोगों से पुछताछ की फिर भी
मुन्ना का कोई नामोनिशान न था।

एक महीने तक ऐसे ही चलता रहा।
आसपास वालों के बीच भी खलबली मच उठी। लोग मुन्ना के
बारे मे तरह-तरह की बाते बनाते रहे परंतु उन सबको
अनसुना कर उसके मम्मी-पापा ने छानबीन को कायम रखा
और आखिर मे कहीं न मिलने पर उन्होनें थाने मे रिपोर्ट
करने की सोची और रिपोर्ट करने पर थाने का पुलिस काफी
क्रोध मे बोला, "अरें! आपका बेटा। महीने से ज़्यादा दिनों से
गायब है और आप इतने दिनों के बाद रिपोर्ट दरज करवा रहे
हो? कैसे बेवकूफ लोग हो आप?" इंदु ने रोते हुए कहा, "साहब
जी हमसे भूल हो गई, माफ़ कर दीजिए आयिंदा से कभी ऐसा
नही करेंगे परंतु हमारे बेटे को ढूँढ दीजिए।" यह सुनकर
सहानुभूति की भावना से पुलिसवाले ने कहा - "जी देखिए, हम
अपनी पूरी कोशिश करेंगे और बाकी सब आप ईश्वर पर छोड़
दीजिए।" यह सुनकर थोड़ी तसल्ली के साथ मुन्ना के माँ-
बाबा वापिस घर लौट गए।

पुलिस ने बहुत पूछताछ की अन्वेषण किया और संशयास्पद लोगों को कड़ी-से-कड़ी सज़ा भी दी परंतु कोई फायदा न हुआ। कोई सुराग न मिलने के कारण पुलिस ने वह केस बंद कर दिया। आज बहुत साल के बाद शेखर के मन में वह स्मृतियाँ एक प्रतिबिंब की तरह याद आई। शेखर ने मन ही मन सोचा की भारत में कानून बहुत सक्त हैं इसलिए उसने पुलिसवालों के पास जाकर फिर से उस केस को खोलने की सोची। हुआ भी कुछ ऐसा ही, उसके पुलिसथाने पर बात करते ही उन्होंने केस दुबारा जाँच करने के लिए हाँ कह दी।

जाँच पड़ताल फिर से और भी सक्त तरीके से हुई परंतु इस बार उनके हाथ काफ़ी सुराग लगे। उन्होंने शेखर को बुलवा भेजा और उससे कहा, "शेखर तुम्हारा भाई मुन्ना जीवित हैं और वह अब बिल्कुल ठीक-ठाक हैं। चिंता की कोई ज़रूरत नहीं।" यह सुनते ही शेखर आश्चर्यचकित हो उठा और उसने फिर से पूछा - "क्या आप सच कह रहे हैं, पुलिस साहब।" पुलिस ने मुस्कुराते हुए कहा, "हाँ, हाँ बिल्कुल सच। जैसा आपका समाज मानता हैं वैसे वह शहीद न हुआ हैं। आखिरकार वह एक वीर सैनिक जो था।" यह सुनते ही शेखर के आँखों में आँसू भर आए और उसने पुलिसवालों से

पूरी घटना बताने को कहा | असल में बात यह थी की नवंबर 26 को जब मुन्ना मोटरसाईकिल से बाहर जा रहा था तब एक तेज़ रफ्तार मे आती ट्रक ने उससे टक्कर कर ली | टक्कर होते ही मुन्ना मोटरसाईकिल से गिर गया और बहुत घायल हो गया | मिनटों मे उसका पूरा शरीर खून से सन गया और वह दर्द से कराह रहा था | यह सारे दृश्य पुलिस ने सी·सी·टी·वी से देखे थे | अचानक एक आदमी आता है मुन्ना की नसे देखता है और तुरंत अस्पताल पहुँचाता है | निश्चिंत समय पर अस्पताल पहुँचाने से मुन्ना अब सही सलामत था |

पुलिस ने बताया कि मुन्ना के जानबचाने वाले का नाम राघव था | शेखर तुरंत राघव के करीब गया और उससे पूछा, "आपने मेरी भाई की जान बचाकर बड़ा उपकार किया परंतु आपने ऐसा क्यों किया |" यह सुनते ही राघव बोला – "इससे भी बड़ा उपकार आपके भाई मुन्ना साहब ने हमसे किया है | मेरी बेटी मौनिका की गुर्दों मे खराबी थी | यह बात मुन्ना साहब को बताने पर उन्होंने अपना एक गुर्दा मेरी बेटी को दान दे दिया | इतना कहते ही राघव के आँखों मे आँसू भर गए | वह कहने लगा, "बड़ा नेक आदमी है, साहब |" इस बात को सुनकर मैं चौंक

उठा। कोई अपने जान के बदले ~~किस~~ किसी और की जान कैसे बचा सकता है? मुन्ना करुणा का सागर थे परोपकार के प्रतिमुर्ति थे। एक परोपकार के बजाय दूसरा परोपकार यही तो जीवन चक्र है।

देखिए, एक आदमी के एक नेक विचार से आज कितने जान जीवित है। इसीलिए मुन्ना के जैसे नही बल्कि हमे मुन्ना के हरएक स्वभावगुण को अपनाना चाहिए।

काश, मुन्ना के जैसे और परोपकारियों का जन्म इस मिट्टी मे हो।

मूल्य:- हमेशा सभी की मदद करें, ताकि सभी आपकी मदद करें।